International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY *(IJARETY)*

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 10, Issue 5, September 2023 ||

'शेष यात्रा'- स्त्री संघर्ष की अकथ कथा

DR. SOHAN RAJ PARMAR

Professor In Dept. Of Hindi, Govt. PG College, Barmer, Rajasthan, India

शोध सार :-उषा प्रियंवदा हिंदी साहित्य की एक ऐसी सशक्त महिला लेखिका हैं जो हजारों की भीड़ में भी अपनी एक अलग पहचान रखती हैं। इसका कारण यह है कि उनकी कृतियाँ जन-जीवन के साथ-साथ सीधा वार्तालाप करती हुई, उनके संघर्षो को स्वर प्रदान करती है। इन्हों ने अपनी कृतियों के माध्यम से पुरुष शासित समाज के हाथों कठपुतली बनी नारी जीवन की व्यथा-कथा को साकार किया है उषा प्रियंवदा ने 'पचपन खंभे लाल दिवारें (1961), 'रुकोगी नहीं राधिका' (1967), 'शेष यात्रा' (1984), 'अंतर्वशी' (2000), 'भया कबीर उदार' (2007) जैसे उपन्यासों का सृजन किया है पर शेष यात्रा' उनके सृजनात्मवक लेखन को नई दिशा देने वाली कृति है जिसमें नारी जीवन को त्रासद स्थितियों का सवल दस्तावेज उपलब्धन है। उपन्यास की नायिका अनु की साहसशील संघर्ष गाथा पाठकों की दृष्टि सहज आकर्षित करती है संपूर्ण उपन्यास में नारी संवेदना अपने विभिन्न रूपों में व्यक्त है। संवेदना नदी की धारा की तरह है कहीं सहज प्रवाह से चलती है तो कहीं मंद प्रवाह से अर्थात जीवन के उतार-चढ़ाव के अनुरूप संवेदना के स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है। दुखात्मतक तो सुखात्मक स्वरूप धारण करती है। नारी के संघर्षमयी कथाओं के ढांचे में चुनी गई उपन्यासों में शेष यात्रा' का महत्वकपूर्ण स्थपन है। यह उपन्यास उषा प्रियंवदा की प्रवासी व्यक्तिगत जवीन की अनुभवों का सरोकार है। इस उपन्यास की मुख्य समस्या प्रवासी भारतीय महिला की अमेरिकी परिवेश और मूल्यों की बीच द्वंद्व और सामंजस्य की है।

हमारी पितृसत्तात्मक पुरुष वर्चस्ववादी सत्ता को सामाजिक संरचना सनातन रूप से चली आई है और आज भी चल रही है। स्त्री की पराधीनता का इतिहास बहुत लंबा रहा है, किंतु नवजागरण के प्रभावस्वरूप धीरे-धीरे स्त्री पराधीनता की इन बेडियों से बाहर आ रही है। आज की नारी अपने अस्तित्व को तराशने में संलग्न है, वह अपनी आत्मनिर्भरता की हिमायत करती है क्योंकि स्त्री का जितना शोषण आत्मनिर्भरता के अभाव में होता है, उतना आत्मनिर्भर होने पर दिखाई नहीं देता है।

अनु भी पति द्वारा छोड़ दिए जाने के बाद भारत वापस न आकर अमेरिका में ही संघर्ष करते हुए आत्मनिर्भर बनती है। अनु की जीवन यात्रा का यह खंड नारी संवेदना के रागात्मक रूप को दर्शाता है।

मुख्य बिंदु:- संघर्ष, अस्मिता की तलाश, सामाजिक सद्भाव, संघर्ष के विविध पक्ष (व्यक्ति, परिवार, समाज), चुनौतियाँ।

परिचयात्मक :-आज जहाँ पूरी दुनिया में स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री सशक्तीकरण की बातें जोर-शोर से चल रही है, किंतु यथार्थ के धरातल पर स्त्री सशक्तीकरण आज भी एक चुनौती बना हुआ है। समाज का महत्त्वपूर्ण हिस्सा अधिकार संचेतना से वंचित ही है। वर्तमान में भी घोर उपेक्षा का शिकार है तो ऐसे समय में उषा प्रियंवदा का स्मरण स्वाभाविक है। दरअसल उनकी कृतियों में व्यवस्था विरोधी स्वर प्रबल है। उनकी रचनाओं में स्त्री भले शोषण का शिकार हो परंतु खुद को दयनीय नहीं बनाती है। संघर्ष करती है, अपने शर्तों पर अपनी परिस्थिति को स्वीकारती है, पर घुटने नहीं टेकती है। इनकी विवशता तथा कष्ट का वर्णन करते हुए लेखिका ने महिलाओं को समाज द्वारा कमजोर साबित करने वाली विचारधारा को तोड़ा है। यह स्त्री पात्र विवश की जाती हैं. इन्हें कष्ट दिया जाता है. परंतु यह ऐसी विषम परिस्थिति में भी जिंदगी जीने का रास्ता चुनकर समाज के सारे ऐसे बंधनों पर जोरदार तमाचा जड़ती है जो महिलाओं को अबला का पर्याय बनाने के लिए गढ़े गए हैं. 'शेष यात्रा' की अनु एक ऐसी नारी चरित्र है। पति द्वारा त्याग दिए जाने पर वह नारी की परंपरागत सामर्थ्यहीनता को अनुकरणीय रूप में तोड़ती है और अपनी पहचान नये सिरे से गढ़ती है।[1,2,3]

विषय प्रतिपादन :-उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'शेष यात्रा 'स्त्री संघर्ष की अकथ कथा' विषय पर चर्चा करने के क्रम में स्त्री विमर्श की चर्चा जरूरी है। समकालीन परिवेश विभिन्न विमर्शो के दौर का समय है। जैसे दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श स्त्री विमर्श इसमें - से स्त्री विमर्श एक महत्व पूर्ण विमर्श है। 'फेमिनिट डिकोर्स' का प्रारंभ कब हुआ, इसके संबंध में विद्वानों में सुनिश्चित एकमतता नहीं है। कुछ लोगों के अनुसार इसका प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ, जब पश्चिम में स्त्रियों के मताधिकार और पाश्चात्य संस्कृति में स्त्रियों के योगदान पर चर्चा होने लगी थी, लेकिन वास्तिविकता यह है कि स्त्री विमर्श बीसवीं शताब्दी की देन है। बीसवीं शताब्दी में भी कुछ लोग इसका प्रारंभ फ्रांसीसी लेखक सिमोन द बोउवार की पुस्तक 'द सेकेंड सेक्स' (1949) के प्रकाशन वर्ष से मानते हैं और कुछ मैरी एलमन की पुस्तक 'शिकिंग एबाउट वीमन' (1968) के प्रकाशन वर्ष से। लेकिन अधिकांश विद्वान इस तरह के किसी वर्ष विशेष को स्त्री विमर्श का प्रस्थान बिंदू मानना उचित नहीं समझते क्योंकि बीसवीं शताब्दी में भी इसके पहले भी स्त्री की अलग पहचान, उनके स्वतंत्र अस्तित्व और उसके अधिकारों की समस्या को उठाया जाने लगा था। उदाहरण के लिए वर्जीनिया वुल्फ ने

अपनी पुस्तक 'ए रूम ऑफ वन्स ओन (अपना निजी कक्ष, 1929) में लिखा था "हाइलाइट के पास से गुजरते हुए - किसी भी स्त्री को अपने वर्चस्व का बोध होते ही अपनी चतना में अचानक उत्पन्न होने वाली दरार को लेकर आश्चर्य होता है यिक मानवीयता की सहज उत्ताराधिकारिणी होने पर वह इसके बाहर, इससे परकीय और इसकी आलोचक कैसे हो गई है।फ्रांसीसी और अमेरिकी नारिवादियों ने साहित्यिक भाषा का विशेष रूप से विवेचन किया है और यह निष्कर्ष निकाला है, जिसका सार जूलिया क्रिस्टीवा के इस वाक्य में अंतर्निहित है "पितृसत्तात्मक भाषिक संरचना में स्त्रीत्व ही वह सब कुछ है, जिसे दबाया गया है। इस स्त्रीत्व को उभारना, बदलना और पठित पाठों का पुनर्पाठ और उपपाठों का पुनराविष्कार ही साहित्यिक क्षेत्र में स्त्री विमर्श का मुख्य लक्ष्य है।
नारी के संघर्षमयी कथाओं के ढाँचे में बुनी गई उपन्यासों में 'शेष यात्रा' का महत्वकपूर्ण स्थान है। यह उपन्यास उषा प्रियंवदा को प्रवासी व्यक्तिगत जीवन की अनुभवों का सरोकार है। इस उपन्यास की मुख्य समस्या प्रवासी भारतीय महिला की अमेरिकी परिवेश और मूल्यों के बीच द्वंद्व और सामंजस्य की है।
उपन्यास के पूरी कथा के केंद्र में अनु है यानि अनुका बी.एससी. में पढ़ने वाली एक साधारण सहज लड़की बिना माँ-बाप की नाजुक, घरेलू सी लड़की का विवाह अचानक एक दिन डॉ० प्रणव कुमार के साथ हो जाता है। उसकी पसंद या नापसंद का कोई सवाल नहीं उठता है। वह प्रणव कुमार की परिणीता बनकर अपने कस्बों से निकलकर अमरीका जा पहुँचती है। अमेरिका पहुँचकर अनु वहाँ को सभ्यता व संस्कृति को अपना कर पूर्णतः प्रणव की आश्रित बनकर रहती है। भारतीय समाजों व समुदायों में स्त्री संबंधी पूर्वधारणाओं व रीति-रिवाजों का कोई अंत नहीं है। जन्म से लेकर मरण तक ये प्रथाएं लंबी और गहरे स्तर पर हर स्त्री जीवन को वलयित रखती है। हर जाति, समुदाय की अपनी प्रथाएं होती हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी से व्यवहृत होने के कारण उनमें अधिकाधिक उनके दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाती है और उनसे अलग होने की बात वे सोच नहीं पाते हैं। अवैज्ञानिक एवं अकारण लगने पर भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसी का अनुसरण करती है। इसी कारण पढ़ी-लिखी होने पर भी वह इन उसूलों से बाहर नहीं निकल पाती है। विरोध का हाथ थाम नहीं पाती है। प्रणव के जीवन में अनु की अहमियत सज्जा की वस्तु मात्र है। नारी को भूमिका और अपने अस्तित्व से कोसो दूर आकर अनु आदर्श समर्पित नारी का प्रनिनिधित्व करती हुई विदेश में श्रीमती कुमार बनकर ग्रहस्थ जीवन जीती है। वह आत्म-विमुग्ध सी अपने भ्रमित जीवन के लिए ईश्वर के प्रति कृतज्ञ रहती है। "वह सपना जी रही है, गॉड हैज बीन काइंड टॅ मी उसने कृतज्ञता से भरकर अपने आप से कहा।"
भारतीय नारी को पुरुष की प्रत्येक अभिलाषा पूरी करने की शिक्षा दी जाती है तथा प्रत्येक स्थिति में प्रसन्नचित रहने का गुण उसमें भरा आता है। अनु भी इन्हीं संस्कार के साथ अपने घर पहुंचती तो साज-सज्जा और वैभव युक्त घर देखकर आल्हादित हो गई। वह यह भूल गई कि वह भी इन्हीं वस्तुओं की भांति पसंद करके लाई गई सज्जा की वस्तु मात्र है। इस वैभव से प्रमुदित अनु प्रणव के प्रत्येक स्वप्न को पूरा करने का प्रण करती है "वह मन ही मन निश्चय करती है, वह भी नंबर वन बनेगी। प्रणव को हर ख्वाहिश पूरी करेगी,सब कुछ सीखेगी।"[4,5,6]
अनु के लिए उसका घर संसार का केंद्र है और यथार्थ भी यह कदरा है। यह गर्भ है, जो बाहरी संकटों के विरुद्ध आश्रय देता है। दुविधाओं से भरा संसार उसे असत्य प्रतीत होता है। अनु का वैवाहिक जीवन सुख से कट रहा था किंतु कुछ ही वर्षों बाद अहंवादी प्रणव और अनु के बीच टकराव शुरू हो जाता है। प्रणव के जीवन में अनु की अहमियत एक सजावट की वस्तु सी है। कुछ समय के उपरांत वस्तु की चमक फिकी पड़ने लगती है, तो लोग उसे अवांछनीय वस्तु की तरह घर से निकाल कर बाहर फेंकने लगते है उसी तरह प्रणव भी अपनी जिंदगी से अनु को बाहर निकाल फेंकता है- "छोड़ दो मुझे... प्रणव ने दो टूक उत्तर दिया छोड़ दूर कैसे ?"
कहीं न कहीं प्रणव के लिए ये सारी चीजें सामान्य थी लेकिन अनु के लिए तो उसका सर्वस्व ही नष्ट हो गया है। अनु का व्यक्तित्व रूपी दर्पण प्रणव के विश्वासघात से चकनाचूर हो जाता है। उसके प्रत्येक कण में मर्मस्पर्शी पीड़ा की झंकार सुनाई पड़ती है। अनु की पीड़ा कण-कण बिखर चुके उसके अस्तित्व बोध की पीड़ा है।
अनु की समस्त विचारशीलता रेशा-रेशा होकर बिखर जाती है। सम्राज्ञी से शून्यत तक पहुँचे हुए जीवन की व्यथा ने उसका सर्वस्व झकझोर दिया है। आश्रयहीन अनु की इस पीड़ा का मर्म उसके शब्दों में "गॉड ओ गॉड हेल्प मी, मेरी मदद करो मुझे शक्ति दो ओ सत्तीम मैया, ओ साई बाबा...मनसा देवी, तुम्हीं चीर बाँचूँगी। विध्यवासिनी देवी, तुम्हें चुनरी उड़ाऊँगी, मेरे प्रणव को मुझे लौटा दो हनुमान जी, जिंदगी भर मंगल का व्रत करूँगी, लक्ष्मी नारायण, मैं सोने का छत्र चढ़ाऊँगी, तिरूपति के स्वीमी तुम्हें। "तत्पश्चात शक्तिहीन होकर पलंग पर गिर जाती है।
अनु को समर्पण के स्थान पर असम्मान एवं विश्वासघात मिलता है। अनु विदेशी भूमि पर अपने को निराश्रित पाती है। अनु का अंतर्मन विभिन्न अता से भर जाता है। वह अपनी आँख मूंद लेती है, वह संसार को देखना ही नहीं चाहती है। ऐसे ही पड़ पड़े अपनी जान दे देना चाहती है। अब अनु का सामना जीवन के कटु यथार्थ से होता है। पितृसतात्मक व्यवस्था का सुरक्षा घेरा जिसमें अब तक वह सुरक्षित रहती आई थी, अचानक हट जाता है और वह बिल्कुल अकली हो जाती है, तब वह अपने आप को पहचानती है। वह स्वयं को अपने चारों ओर की दुनिया जहान को नई आँखों से देखती है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था का परदा उसकी आँखों पर से हट

जाता है। पुरुष की आँख से दुनिया को देखने की आदत ने उसे अपनी दृष्टि से अपरिचित बना दिया था। अब वह बिना किसी चश्मे के अपने आँखों से अंदर बाहर की दुनिया देखने को लालायित है। अब वह सब को एक नई दृष्टि से देखती है, यहाँ तक कि प्रणव को भी।

जहाँ स्त्री अपना वर्चस्व न्योछावर कर पुरुष की आज्ञा और इच्छा अनिच्छा की बाट जोहती रहती है। लेकिन देर से ही सही उसका सब टूटा है। प्रेम, विश्वास जज्बात, खामोशी और संतोष को वर्षों से ओढ़ी हुई चादर उतार कर अपनी अस्मिता की खोज करती है। अनु के अंधकारमयी जवीन में प्रेरणा रूपी प्रकाश दिया लेकर आती है। वह उसे जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। वह अनु को समझाते हुए कहती है तुम में किसी चीज की कमी नहीं है। अपने को तुम जरा देखो तो अनु अपने खोए हुए वजूद को पहचानती है।

उसने पहचाना कि 'वह' है उसका होना भी अपने आप में मायने रखता है। अब वह सारे संदर्भों से मुक्त है और अपने आप का संदर्भ खुद स्वयं है।अनु अब प्रीमेडिकल टेस्ट की तैयारी करती है। वह अपनी खोये हुए अस्तित्व की तलाश पर निकल पड़ती है। अनु परिपक्व नारी का प्रतीक है, उसने स्वयं को कभी भी परिश्रम करने से नहीं रोका, "उसने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देख, एक बार न जुड़ने की प्रक्रिया सध जाए तो आगे सब कुछ कितना सहज हो जाता है, अनु ने सोचा, पढ़ाई में उसने अपने को पूरा पूरा झोंक दिया है, इसमें हारने की गुंजाइश नहीं, कम से कम समय में अधिक काम की उपलब्धियाँ करना एक चैलेंज है, एक साधना है।"[7,8,9]

अनु उस नारी का प्रतिनिधित्व करती है जो जागरण की दहलीज पर खड़ी है और अपने विकास के नवीन आयामों को प्राप्त करने के लिए तत्पर है। यह वह नारी है जो अपने अस्तित्व को तलाशने माँझने के कार्य में संलग्न है। जीवन के कुरूप भागों को भी रूपवान एवं अर्थमय बनने की शक्ति इस नौर में संचित हैं-

"नारी जीवन का चित्र यही,

क्या विकल रंग भर देती हो। अस्फुट रेखा की सीमा मेंआकार कला को देती हो। "अनु ऐसी ही नारी के रूप में उभरती है जो कल तक घर की दहलीज के भीतर थी सहमी, सकुचाई, ठिठकी-ठिठकी आज वह दहलीज के पार है। अपीन जमीन तलाशती है, कल तक उसके सपने आँखों की पलकों पर ही चिपके रहते थे, आज वे सपने साकार बन रहे हैं।

एक लंबे संघर्ष के बाद अनु अब डॉ० अनु बन गई है। कभी-कभी जीवन में मुश्किले हमें बर्बाद करने के लिए नहीं आती हैं। विपरीत परिस्थितियाँ हमें बिखरेती भी हैं और तोड़ती भी हैं लेकिन फिर खुद को समेटने की ताकत भी देती हुई एक नई राह पर चलना सीखा ही देती है। हालांकि नई राह का सफर आसान नहीं होता है।

अपनी पहचान से जो सुख, आनंद और संतोष होता है वही चिकित्सा बन जाने पर अनु को भी हुआ है। वह संत्रास, घुटन, अंधकार से निकलकर स्वतंत्र स्वच्छ वातावरण में एक नई पहचान के साथ सार्थक जीवन जीती है। आज अनु के पास करियर.. बच्चा, पति सबकुछ है। लेकिन प्रणव लक्ष्यहीन भटकाव की जिंदगी जीता है। विपरीत परिस्थितियों में खुद के वजूद को जिंदा रखने की जिजीविषा उनकी नारी को वह ऊँचाई प्रदान करती है जहाँ से वे अपनी जड़ों को मजबूत करती हैं।

वर्तमान में नारी ने अपने संरक्षित होने के आवरण को त्याग दिया है। पुरुष का साथ उसके जीवन के लिए आवश्यक नहीं है। वह अकेली संसार में रह सकती है। अनु भी इस बेफिक्री से कहती हैं "स्थाई रूप से पुरुष जीवन में न हो, जरूरत भी किसे है।" यह अपने अस्तित्व को जान लेने का ही प्रभाव है। आत्म निर्भरता के अभाव में महिला शोषण का अधिक शिकार होती है।

डॉ० शांति कुमार स्थाल के अनुसार, "नारी पहले अनुमगामिनी होती है फिर सहभागिनी होती है और अंत में अग्रगामिनी हो जाती है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसकी महत्त्वपूर्ण स्थिति और उपयोगिता है वह पुरुष की तुलना में परिश्रम, प्रेम, सहानुभूति, सेवा और जीवन के अन्यान्य क्षेत्रों में उससे सदैव आगे रही है और रहेगी।" इस कथन के अनुरूप ही अनु का जीवन आगे बढ़ा है। पहले वह एक बच्चे की भांति अनुगामिनी फिर शिक्षाग्रहण करते समय सहभागिता और अंततः वह प्रणव से अग्रगामी हो जाती है। जिस अलगाव के बाद प्रणव अस्थिर रहा और रोगग्रस्त हो गया उसी अलगाव पर अपने बिखरे अस्तित्व को अनु ने पुनः गढ़ा है। इसकी सृजनकार वह स्वयं है।

उपसंहार :- 'शेष यात्रा' में नारी संवेदना के विविध रूपों को देखने से पता चलता है कि नारी संवेदना कभी तीव्र कभी मंथर, कभी सहज रूप से प्रवाहित होती रही है। विभिन्न कठिनाइयों को पार करती हुई अंततः अनु अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेती है। उषा प्रियंवदा ने इस उपन्यास के माध्वरम से अबला से सबला बनने की कहानी रोचक रूप में प्रस्तुत की हैं। नारी संवेदना के विभिन्न रंग 'शेष यात्रा' में यत्र तत्र सर्वत्र बिखरे पड़े हैं।

वस्तुतः नारी की परंपरागत सामर्थ्य होनता की छवि को तोड़कर उसे नये आत्म-विश्वास की द्युति में प्रदीप्त कर उषा प्रियंवदा ने अपनी स्त्री चिंतन के आयाम को 'शेष यात्रा' में पर्याप्त व्यापकता एवं गहराई दी है। अतः 'शेष यात्रा' में स्त्री चिंतन अपने संपूर्ण वैभव

एवं सौंदर्य के साथ व्यक्ति हुई है। लेखिका स्त्री जीवन की समस्याओं का चित्रण करने के साथ ही साथ स्त्रियों को जागरुक होने के लिए प्रेरित भी करती है।[10]

संदर्भ सूची

1. डॉ० नगेंद्र (संपादक), डॉ हरदयाल, 'हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रथम संस्करण: 1973, तीसवा पुनर्मुद्रण संस्करण: 2010, पृष्ठ संख्या-432
2. वही, पृष्ठ संख्या-436
3. प्रियंवदा उषा शेष यात्रा, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली-3 प्रथम संस्करण: 2010, पृष्ठ संख्या- 56
4. वही, पृष्ठ संख्या 22-40
5. वही, पृष्ठ संख्या -56
6. वही, पृष्ठ संख्या- 61
7. वही, पृष्ठ संख्या - 117
8. डॉ. श्रीधर प्रदीप, स्त्री चितन की अंतर्धाराएं और समकालीन हिंदी उपन्यास', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2010 पृष्ठ संख्या -75
9. प्रियंवदा उषा शेष यात्रा, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2010, पृष्ठ संख्या-117
10. डॉ. श्रीधर प्रदीप, स्त्री चिंतन की अंतर्भाग और समकालीन हिंदी उपन्यास, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2010 पृष्ठ संख्या 78-79

IJARETY

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi
crossref

निस्केयर
NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com